पाठ - संस्कृति

शब्दार्थ -

1. **उपयोग** – किसी वस्तु, व्यक्ति अथवा स्थान को इस्तेमाल में लाना, प्रयोग में लाना
2. **सभ्यता** – सभ्य होने की अवस्था भाव, शिष्टता, तहज़ीब, कायदा, शराफ़त, शालीनता, बुद्धिमान होने का गुण
3. **संस्कृति** – परंपरा से चली आ रही आचार–विचार, रहन–सहन एवं जीवन पद्धति, संस्कार
4. **विशेषण** – संज्ञा की विशेषता बताने वाला शब्द, वह जिससे कोई विशेषता सूचित हो
5. **भौतिक** – शरीर संबंधी, पार्थिव, सांसारिक, लौकिक, पाँचों भूत से बना हुआ
6. **आध्यात्मिक** – अध्यात्म या धर्म संबंधी, परमात्मा या आत्मा से संबंध रखने वाला
7. **अंतर** – फ़र्क, भिन्नता, भेदभाव, किन्हीं दो स्थानों के बीच का फ़ासला, स्थान संबंधी दूरी
8. **तरीका** – काम करने का ढंग या शैली, उपाय, युक्ति, आचार या व्यवहार
9. **कल्पना** – सोचना, मान लेना, रचनाशीलता की मानसिक शक्ति, कल्पित करने का भाव
10. **साक्षात** – मूर्तिमान, साकार, आँखों के सामने, प्रत्यक्ष, सम्मुख या मुँह की सीध में, शरीरधारी व्यक्ति के रूप में
11. **आविष्कार** – प्राकट्य, नई खोज, ईजाद
12. **आविष्कर्ता** – आविष्कार करने वाला, नई खोज करने वाला
13. **परिचय** – पहचान, (इंट्रोडक्शन), जानकारी, जान–पहचान
14. **पिरोना** – सुई आदि से किसी छेद वाली वस्तु में धागा डालना
15. **योग्यता** – गुण, क्षमता, औकात, बुद्धिमानी
16. **प्रवृत्ति** – स्वभाव, आदत, झुकाव, रुझान, प्रवाह, बहाव, आचार–व्यवहार
17. **प्रेरणा** – उत्तेजन, उकसाव, मन की तरंग, उमंग
18. **आविष्कृत** – जिसका आविष्कार हुआ हो
19. **परिष्कृत** – जिसका परिष्कार किया गया हो, शुद्ध किया हुआ, जिसे सजाया या सँवारा गया हो, अलंकृत, स्वच्छ, निर्मल
20. **पूर्वज** – परबाबा-बाबा-दादा आदि पुरखे, बड़ा भाई, अग्रज, जिसकी उत्पत्ति या जन्म पहले हुआ हो, अपने से पूर्व का जन्मा हुआ
21. **अनायास** – बिना कोशिश के, बिना मेहनत के, आसानी से, स्वतः
22. **विवेक** – अच्छे–बुरे की परख, सत्य का बोध, सद्बुद्धि, अच्छी समझ
23. **तथ्य** – यथार्थपरक बात, सच्चाई, वास्तविकता
24. **वास्तविक** – यथार्थ, (रीअल), परमार्थ, सत्य
25. **सभ्य** – शिष्ट, शरीफ़, भले आदमियों की तरह व्यवहार करने वाला, सुशील, विनम्र, सामाजिक–राजनीतिक–शैक्षणिक आदि सभी दृष्टियों से उन्नत व उत्तम
26. **आधुनिक** – वर्तमान समय या युग का, समकालीन, सांप्रतिक, हाल का

egyanarchive

27.**गुरुत्वाकर्षण** – भार के कारण वस्तु का पृथ्वी के केंद्र की ओर खींचा जाना, (ग्रैविटेशन)

28.**सिद्धांत** – पर्याप्त तर्क–वितर्क के पश्चात निश्चित किया गया मत, उसूल, (प्रिंसिपल)

29.**भौतिक विज्ञान** – प्राकृतिक नियमों के सिद्धांतों का विज्ञान

30.**कदाचित** – संभवतः, शायद, कभी

31.**शीतोष्ण** – शीत और उष्ण, ठंडा और गरम, शीत और उष्ण का लगभग बराबर तालमेल, (टेंपरेट)

32.**प्रवृति** – स्वभाव, आदत, झुकाव, रुझान

33.**कल्पना** – रचनाशीलता की मानसिक शक्ति, कल्पित करने का भाव, सोचना, मान लेना

34.**थाल** – पीतल या स्टील का चौड़ा और छिछला पात्र जिसमें भोजन परोसा जाता है, बड़ी थाली

35.**निठल्ला** – जिसके पास कोई काम–धंधा न हो, बेरोज़गार, खाली, बेकार, जो कोई काम न करता हो, आलसी

36.**चेतना** – ज्ञान, बुद्धि, याद, स्मृति, चेतनता, जीवन, सोचना, समझना

37.**स्थूल** – बड़े आकार का, बड़ा, जो सूक्ष्म न हो, जो स्पष्ट दिखाई देता हो, मंद बुद्धि का, मूर्ख

38.**मनीषियों** – विद्वान, बुद्धिमान, पंडित, ज्ञानी, चिंतन–मनन करने वाला, विचारशील

39.**वशीभूत** – अधीन हो कर, वश में होकर, मुग्ध, मोहित, सम्मोहित

40.**सहज** – सरल, सुगम, स्वाभाविक, सामान्य, साधारण

41.**पुरस्कर्ता** – प्रस्तुत करने वाला व्यक्ति, सामने लाने वाला व्यक्ति

42.**ज्ञानेप्सा** – ज्ञान प्राप्त करने की लालसा

43.**कौर** – रोटी का एक टुकड़ा, ग्रास, निवाला

44.**तृष्णा** – अप्राप्त को पाने की तीव्र इच्छा, पिपासा, लालसा, प्रबल वासना, कामना

45.**सर्वस्व** – सब कुछ, सारी धन–संपत्ति, अमूल्य निधि या पदार्थ

46.**गमनागमन** – आने-जाने

47.**परस्पर** – एक दूसरे के साथ, एक दूसरे के प्रति, दो या दो से अधिक पक्षों में

48.**अवश्यंभावी** – जिसका होना निश्चित हो, जिसके होने की पूरी संभावना हो, जिसे टाला न जा सके, अनिवार्य

49.**रक्षणीय** – रक्षा करने योग्य, जिसे सुरक्षित रखना हो, रखने योग्य

50.**प्रज्ञा** – बुद्धि, समझ, विवेक, मति, मनीषा

51.**मैत्री** – दोस्ती, मित्रता

52.**अविभाज्य** – जो विभाजित न किया जा सके, जिसे बाँटा न जा सके

53.**अपेक्षा** – तुलना में

54.**श्रेष्ठ** – सर्वोत्तम, उत्कृष्ट, जो सबसे अच्छा हो

55.**स्थायी** – हमेशा बना रहने वाला, सदा स्थित रहने वाला, नष्ट न होने वाला

egyanarchive

प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1. लेखक की दृष्टि से 'सभ्यता' और 'संस्कृति' की सही समझ अब तक क्यों नहीं बन पाई है?

उत्तर: लेखक की दृष्टि से 'सभ्यता' और 'संस्कृति' की सही समझ अब तक इसलिए नहीं बन पायी, क्योंकि हम इन दोनों बातों को एक ही समझते हैं या एक-दूसरे में मिला देते हैं। वस्तुतः इन दोनों शब्दों के साथ अनेक विश्लेषण लगा देने के कारण इनका अर्थ गड़बड़ा जाता है। दोनों के अन्तर को समझने का प्रयास भी नहीं हुआ और संस्कृति को देशों और धर्मों में बाँटकर परिभाषित करने की भी प्रवृत्ति रही है।

प्रश्न 2. आग की खोज एक बहुत बड़ी खोज क्यों मानी जाती है? इस खोज के पीछे रही प्रेरणा के मुख्य स्रोत क्या रहे होंगे?

उत्तर: आग की खोज एक बहुत बड़ी खोज इसलिए मानी जाती है, क्योंकि यह खोज हमारे जीवन संचालन की एक बहुत बड़ी आवश्यकता भोजन पकाने के काम आती है। इसलिए इस खोज को आदिमानव ने एक बहुत बड़ी खोज माना और आज भी हमारे जीवन में इसका सर्वोपरि स्थान है। इसकी खोज के पीछे पेट की ज्वाला शान्त करने की प्रेरणा प्रमुख थी, साथ ही प्रकाश और गर्मी पाने की प्रेरणा भी रही होगी।

शीत ऋतु से बचने के लिए आदिमानव इसका उपयोग करता होगा और इसी में मांस आदि भूनकर तथा जंगली कन्द-मूल पकाकर खाता होगा। शीत से रक्षा पाने और पेट भरने पर वह कितना आनंदित होता होगा। इसी आनन्द की अनुभूति के कारण उसने अग्नि को देवता माना होगा और इसकी उपासना की होगी, जो आज भी प्रचलन में है।

प्रश्न 3. वास्तविक अर्थों में संस्कृत व्यक्ति' किसे कहा जा सकता है?

उत्तर: लेखक के अनुसार वास्तविक अर्थ में 'संस्कृत व्यक्ति' उसे कहा जा सकता है, जो अपनी बुद्धि और विवेक के बल पर किसी नयी चीज की खोज करें और उसका दर्शन करें। अर्थात् किसी नयी चीज का आविष्कर्ता व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति कहा जा सकता है। उदाहरण के लिए, न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त खोजा। अतः उसे 'संस्कृत व्यक्ति' कहा जा सकता है।

egyanarchive

प्रश्न 4. न्यूटन को संस्कृत मानव कहने के पीछे कौन से तर्क दिए गए हैं? न्यूटन द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों एवं ज्ञान की कई दूसरी बारीकियों को जानने वाले लोग भी न्यूटन की तरह संस्कृत नहीं कहला सकते, क्यों?

उत्तर: न्यूटन को संस्कृत मानव कहने के पीछे लेखक ने तर्क देते हुए कहा है कि जो व्यक्ति अपनी बुद्धि और विवेक से किसी नयी चीज का अनुसंधान और दर्शन कर सकता है, वही व्यक्ति संस्कृत है। न्यूटन ने भी अपनी बुद्धि और विवेक के बल पर विज्ञान के नियम की खोज की और उसे सबके सामने रखा। इस कारण वह संस्कृत व्यक्ति हुआ। लेकिन दूसरे लोग न्यूटन के सिद्धान्त की बारीकियों को भले ही ज्यादा जानते हों, इसलिए वे सभ्य तो कहे जा सकते हैं, पर संस्कृत व्यक्ति नहीं कहला सकते हैं, क्योंकि उन्होंने अपनी बुद्धि और विवेक के बल पर किसी नयी चीज की खोज नहीं की।

प्रश्न 5. किन महत्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सुई-धागे का आविष्कार किया होगा?
उत्तर: जिस तरह आदिमानव ने सबसे पहले अपने शरीर को सर्दी-गर्मी से बचाने के लिए सूई-धागे का आविष्कार किया होगा। फिर अपने शरीर को सजाने के लिए सूई-धागे की सहायता से कपड़े के दो हिस्सों को सिला होगा और उसे शरीर पर पहना होगा।

प्रश्न 6. 'मानव संस्कृति एक अविभाज्य वस्तु है।' किन्हीं दो प्रसंगों का उल्लेख कीजिए जब
(क) मानव संस्कृति को विभाजित करने की चेष्टाएँ की गईं।
(ख) जब मानव संस्कृति ने अपने एक होने का प्रमाण दिया।
उत्तर:
(क) मानव संस्कृति एक है लेकिन यदि उसे हिन्दू और मुस्लिम धर्म के आधार पर देखा जाए तो काफी भेदभाव है। मनुष्य का यह स्वाभाविक गुण है, वह जिस संस्कृति का पक्षधर होता है उसको महान बताना चाहता है और उसकी श्रेष्ठताओं और उपलब्धियों को याद रखना चाहता है। इसके साथ ही उसकी पहचान भी स्थापित करना चाहता है। मानव संस्कृति को धर्म-सम्प्रदाय के आधार पर बाँटने की चेष्टाएँ की गई हैं अर्थात् हिन्दू संस्कृति और मुस्लिम-संस्कृति कहकर उनसे एक-दूसरे को खतरा बताया गया है।

उदाहरण के लिए, ताजिया निकालने के लिए यदि पीपल का तना कट गया हो तो हिन्दू-संस्कृति खतरे में पड़ गयी बताई जाती है। इसी प्रकार मस्जिद के सामने बाजा बजने पर मुस्लिम संस्कृति खतरे में पड़ गयी बताई जाती है। इन बातों से मानव संस्कृति को विभाजित करने की चेष्टाएँ की गईं। उदाहरण के लिए (1) भारत को स्वतन्त्रता-प्राप्ति के समय धार्मिक आधार पर भारत-पाक का विभाजन किया गया। (2) भारतीय लोकतन्त्र में वोट बैंक की राजनीति अपनाकर नेताओं ने जातिगत आरक्षण देकर भारतीय संस्कृति को विभाजित करने की चेष्टा की है।

(ख) मानव-संस्कृति एक है। इसी बड़ी सोच के आधार पर हिन्दू-मुस्लिम का भेद त्यागकर हमारे महापुरुषों एवं मनीषियों ने सभी संस्कृतियों की अच्छी चीजों को खुले मन से अपनाया। 'त्याग' संस्कृति का श्रेष्ठ गुण है इसलिए इस गुण को हिन्दू हो या मुसलमान हो या फिर अन्य कोई सम्प्रदायी हो, सभी ने समान रूप से उसे अपनाने की चेष्टा की है। इसी तरह 'बुद्ध' के 'अप्प दीपो भव' (अपने दीपक स्वयं बनो) पर सभी का समान रूप से अधिकार है। जब अमेरिका द्वारा जापान पर परमाणु बम गिराया गया तो दुनिया की सभी संस्कृतियों ने इसका खुलकर विरोध किया। इसी प्रकार 'रसखान' ने कृष्ण का गुणगान किया तो उस्ताद बिस्मिल्ला खां ने बालाजी के लिया। इसी प्रकार हजारों की संख्या में हिन्दू अजमेर शरीफ जाकर दुआ करते हैं और पीरों की पूजा करते हैं।

प्रश्न 7. आशय स्पष्ट कीजिए
मानव की जो योग्यता उससे आत्म-विनाश के साधनों का आविष्कार कराती है, हम इसे उसकी संस्कृति कहें या

egyanarchive

असंस्कृति?
उत्तर: आशय यह है कि मानव की जो योग्यता है, उस योग्यता के आधार पर उसे मानव कल्याण के लिए उपयोगी चीजों का आविष्कार आग और सुई-धागे की तरह करना चाहिए। उसका यह आविष्कार सृजन कहलाता है लेकिन जब मनुष्य अपनी योग्यता के आधार पर विनाश के साधनों का निर्माण करता है तब उसे असंस्कृत कहा जायेगा और उसके आविष्कार या नये निर्माण को संस्कृति न कहकर असंस्कृति ही कहा जायेगा।

रचना और अभिव्यक्ति -
प्रश्न 8. लेखक ने अपने दृष्टिकोण से सभ्यता और संस्कृति की एक परिभाषा दी है। आप सभ्यता और संस्कृति के बारे में क्या सोचते हैं? लिखिए।
उत्तर: लेखक ने स्पष्ट बताया है कि संस्कृति और सभ्यता में पर्याप्त अन्तर है। मानव-कल्याण की आत्मिक भावना रखना संस्कृति है, तो मानव-समाज का बाहरी आचरण सभ्यता है। इस तरह सभ्यता स्थूल होती है और उसके द्वारा हमारे रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा आदि का परिचय मिलता है, जबकि संस्कृति मन के भावों का परिष्कृत रूप है। इसके साथ ही हमारे विचार से संस्कृति आंतरिक वस्तु है और सभ्यता बाहरी।

भाषा-अध्ययन -
प्रश्न 9. निम्नलिखित सामासिक पदों का विग्रह करके समास का भेद भी लिखिए
गलत-सलत, आत्म-विनाश
महामानव, पददलित
हिन्दू-मुसलमान, यथोचित
सप्तर्षि, सुलोचना।
उत्तर:

गलत-सलत

- **विग्रह**: गलत और सलत
- **समास का भेद**: द्वंद्व समास

आत्म-विनाश

- **विग्रह**: आत्मा का विनाश
- **समास का भेद**: तत्पुरुष समास

महामानव

- **विग्रह**: महान मानव
- **समास का भेद**: कर्मधारय समास

पददलित

egyanarchive

- **विग्रह**: पद द्वारा दलित (कुचला हुआ)
- **समास का भेद**: तृतीय तत्पुरुष समास

हिन्दू-मुसलमान

- **विग्रह**: हिन्दू और मुसलमान
- **समास का भेद**: द्वंद्व समास

यथोचित

- **विग्रह**: जैसा उचित हो
- **समास का भेद**: अव्ययीभाव समास

सप्तर्षि

- **विग्रह**: सात ऋषि
- **समास का भेद**: द्विगु समास

सुलोचना

- **विग्रह**: सुंदर लोचना (नेत्र वाली)
- **समास का भेद**: कर्मधारय समास

egyanarchive